AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing IF:3.125 (IIFS)
Vol (2), Issue (2), May-July 2025 ISSN: 3048-7951

सरदार वल्लभभाई पटेल: नेतृत्व कौशल और राष्ट्र निर्माण में योगदान का एक अध्ययन

डॉ. रेनू बाला[1]

DOI: https://doi-ds.org/doilink/09.2025-64464475/ADEJ/V2/I2/RB

Review: 18/08/2025 Acceptance: 25/08/2025 Publication: 12/09/2025

शोध सार

भारतीय संस्कृति की परंपराएं हमारे राष्ट्रीय जीवन में समाई हुई है, ऐतिहासिक काल से ही ऐसे अनगिनत प्रतिभाशाली और प्रतिष्ठित कुल, वंश और परिवार हमारी उच्चता और पवित्रता के प्रमाण रहे हैं जिनसे न केवल उस काल में वरन आज भी हमें प्रेरणा,प्रोत्साहन और प्रकाश मिलता है। इन्हीं प्रतिष्ठित व्यक्तियों में एक नाम सदा स्मरणीय है -सरदार वल्लभ भाई पटेल। पटेल जी का जीवन स्वतंत्र भारत को सुव्यवस्थित, सुसंगठित और आधुनिक स्वरूप प्रदान करने वाला था। उनके विचारों में स्पष्टवादिता, तेज मिजाजी, विचारों की निर्भीकता, अद्भुत अनुशासन प्रियता, अपूर्ण संगठन शक्ति, उनके चरित्र के अनुकरणीय गुण थे। वल्लभभाई पटेल साहसी और दूरदर्शी व्यक्ति थे जो चुनौतियों को स्वीकार करके और कार्य को मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए दृढ़ थे। अपनी सूझबूझ के साथ ही उन्होंने रियासतों को भारतीय संघ में विलय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस शोध पत्र में सरदार पटेल के नेतृत्व कौशल, और भारत को मजबूत बनाने के लिए उनके द्वारा लिए गए निर्णयों का अध्ययन किया गया है। प्राथमिक और द्वितीयक तथा प्रकाशित और अप्रकाशित स्रोतों का उपयोग किया गया है। सरदार वल्लभभाई पटेल की रचनाओं का गहन अध्ययन किया गया है।

मूल शब्द: नेतृत्व, कर्तव्यनिष्ठ, लौह पुरुष, भारतीय एकता।

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति की परंपराएं हमारे राष्ट्रीय जीवन में समाई हुई है, ऐतिहासिक काल से ही ऐसे अनगिनत प्रतिभाशाली और प्रतिष्ठित कुल, वंश और परिवार हमारी उच्चता और पवित्रता के प्रमाण रहे हैं जिनसे न केवल उस काल में वरन आज भी हमें प्रेरणा,प्रोत्साहन और प्रकाश मिलता है। इन्हीं प्रतिष्ठित व्यक्तियों में एक नाम सदा स्मरणीय है -सरदार वल्लभ भाई पटेल। पटेल जी का जीवन स्वतंत्र भारत को सुव्यवस्थित, सुसंगठित और आधुनिक स्वरूप प्रदान करने वाला था। उनके विचारों में स्पष्टवादिता, तेज मिजाजी, विचारों की निर्भीकता, अद्भुत अनुशासन प्रियता, अपूर्ण संगठन शक्ति, उनके चरित्र के अनुकरणीय गुण थे। जिसमें उन्होंने कभी भी समझौता नहीं किया। कर्म उनके जीवन का साधन था व देश सेवा उनकी साधना थी। वे जो

[1] **डॉ. रेनू बाला, असिस्टेंट प्रोफेसर, लोक प्रशासन विभाग, हिंदू कन्या कॉलेज, कपूरथला, पंजाब,** renubala349@gmail.com, 9855080131

कार्य एक बार स्वीकार कर लेते, उसे हर हाल में सफलतापूर्वक पूरा करके ही विश्राम करते। उनका राजनीतिक योगदान देश के व्यापक हित से जुड़ा हुआ होने के कारण ही उन्हें भारतीय बिस्मार्क भी कहा जाता है। वल्लभभाई पटेल साहसी और दूरदर्शी व्यक्ति थे जो चुनौतियों को स्वीकार करके और कार्य को मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए दृढ़ थे। अपनी सूझबूझ के साथ ही उन्होंने रियासतों को भारतीय संघ में विलय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सरदार पटेल भारत माता के उन वीर सपूतों में से एक थे जिनमें देश सेवा और समाज सेवा की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। वे एक सच्चे राष्ट्रभक्त ही नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति के महान समर्थक भी थे। "सादा जीवन उच्च विचार" यही उनके जीवन का आदर्श था।

साहित्यिक समीक्षा

सरदार वल्लभभाई पटेल की विरासत का और उनके आधुनिक भारत के निर्माण में योगदान के संदर्भ में विभिन्न इतिहासकारों, राजनीतिक वैज्ञानिकों और विद्वानों द्वारा व्यापक रूप से विश्लेषण किया गया है।

वि शंकर की," माय रिमिनिसेंस ऑफ़ सरदार पटेल", में सरदार पटेल की नेतृत्व शैली और निर्णय लेने की प्रक्रिया में एक व्यक्तिगत और प्रशासनिक अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। यह पुस्तक पटेल के दिन प्रतिदिन के कामकाज और निर्णय लेने, विशेष रूप से रियासतों की एकीकरण के दौरान स्पष्ट विवरण में से एक है।

राजमोहन गांधी की, "पटेल:अ लाइफ"(1991), सरदार पटेल की राजमोहन गांधी की व्यापक जीवनी पटेल पर सबसे महत्वपूर्ण विद्वता पूर्ण कार्यों में से एक है। यह पुस्तक गांधीजी और पटेल के जीवन का बारीकी से अध्ययन करती है। साथ ही पटेल की एक वकील और राजनेता के रूप में शुरुआती वर्षों से लेकर भारत के पहले गृहमंत्री के रूप में उनकी भूमिका का व्याख्यान करती है।

बी कृष्ण की ",सरदार वल्लभभाई पटेल: भारत का लोह पुरुष", इस पुस्तक में भी कृष्ण ने पटेल की व्यवहारिकता और कठिन परिस्थितियों में कठिन निर्णय लेने की क्षमता पर जोर दिया है।

प्रियंक कुमार की पुस्तक, सरदार वल्लभभाई पटेल,(2007) मे सरदार पटेल की शिक्षा, जीवनशैली, राष्ट्रीय आंदोलन, भारतीय विभाजन व रियासतों को जोड़ने में सरदार वल्लभभाई पटेल के योगदान का बखूबी वर्णन किया है।

नेतृत्व की कला व प्रभावी विश्लेषक

सरदार का अर्थ होता है - नेतृत्व करने वाला व्यक्ति। पटेल का जन्म एक साधारण से कृषक परिवार में हुआ था। बचपन से ही संघर्षमय जीवन व्यतीत करने के कारण उनके स्वभाव में कठोरता तो आई ही थी, साथ ही साथ कठिन से कठिन समस्याओं को सहज ढंग से सुलझाने की क्षमता का विकास इनमें हुआ। उनके स्वभाव में गंभीरता इच्छा शक्ति में लोहे जैसी मजबूती थी। वल्लभ भाई जन्म से ही आकर्षक छवि के थे। गांव के लोग उन्हें अपनी गोद में दुलारना पसंद करते थे। उस समय किसी को पता नहीं था कि यही बालक एक दिन

AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing IF:3.125 (IIFS)
Vol (2), Issue (2), May-July 2025 ISSN: 3048-7951

आधुनिक भारत का निर्माता बनेगा। दूसरों की पीड़ा को समझने व दूर करने के गुण के साथ ही नेतृत्व का गुण भी वल्लभभाई में जन्मजात था। वह इतने अच्छे और व्यावहारिक ढंग से समस्या का विश्लेषण करते थे कि उसे सुनने वाला उनके पक्ष में खड़े होने में देर नहीं लगता था। एक बार वह घर से स्कूल जा रहे थे, उस रास्ते में एक बड़ा सा पत्थर पड़ा था, जिससे बचकर सब निकल जाते थे। कभी-कभी असावधानी से कोई उस पत्थर से टकराकर घायल भी हो जाता था। एक दिन वल्लभभाई स्कूल जा रहे थे, तो उन्होंने देखा कि एक वृद्ध व्यक्ति उस पत्थर से टकराकर घायल हो गया। उन्हें यह देखकर बहुत दुख हुआ। उसी दिन शाम को स्कूल की छुट्टी के बाद वल्लभभाई उस पत्थर को हटाने का प्रयास करने लगे, तो उनके सहपाठियों ने उन्हें देखा और कहा कि यह तुम क्यों हटा रहे हो? तो उन्होंने कहा कि इससे किसी न किसी व्यक्ति को चोट लग जाती है। हर व्यक्ति सावधानी से नहीं चलता, इसीलिए कष्ट देने वाली चीज को उखाड़ फेंकना चाहिए। सभी सहपाठियों ने मिलकर उस पत्थर को वहां से हटा दिया। यही नहीं वल्लभभाई पटेल बचपन से ही स्वाभिमानी व्यक्तित्व के व्यक्ति थे। अपने व्यक्तित्व के कारण वे स्कूल में विद्यार्थियों के नेता बन गए। यदि कोई अध्यापक अनुचित कार्य करता तो वह सहन नहीं करते थे और स्कूल में तुरंत ही हड़ताल करवा देते। एक बार स्कूल में एक अध्यापक ने एक बालक की थोड़ी सी भूल के कारण उसे स्कूल से निकलवा दिया। पटेल को जब यह पता चला तो उन्हें क्रोध आ गया और उन्होंने स्कूल में हड़ताल करवा दी। हड़ताल कई दिनों तक चली। अंत में अध्यापक ने अपनी भूल स्वीकार की ओर वल्लभ ने भी हड़ताल समाप्त कर दी। इस घटना से वल्लभ को विद्यार्थी अपना सरदार मानने लगे।

त्याग और तपस्या की प्रतिमूर्ति

वल्लभभाई इसलिए वकालत कर रहे थे जिससे वे धन कमाकर इंग्लैंड जा सके और वहां जाकर बैरिस्टर की उपाधि प्राप्त कर सके। कानून में उनकी रुचि और पकड़ को देखकर अहमदाबाद से आने वाले बैरिस्टर ने उन्हें अपने सहायक के रूप में रख लिया। इससे वल्लभ भाई को बैरिस्टर के कार्यों की बारीकी निकट से देखने व समझने को मिलती थी। 1905 में उन्होंने थॉमस कुक एंड संस की ओर से नियुक्त बैरिस्टर के साथ काम किया। उसे बैरिस्टर ने उनके काम से प्रसन्न होकर वल्लभभाई को अधिक मेहनताना देने की सिफारिश की जिससे उनकी लंदन जाने की संभावना बढ़ गई। लंदन जाने के लिए जो पत्र व्यवहार वल्लभभाई और थॉमस कुक के साथ चल रहा था उसका अंतिम पत्र वल्लभभाई के पास ना पहुंचकर उनके भाई विट्ठल के पास जा पहुंचा क्योंकि दोनों भाइयों के नाम का संक्षेप वी बी पटेल बनता था। जब पत्र विट्ठल भाई के हाथ लगा तो उन्होंने वल्लभभाई से कहा, तुम मुझसे छोटे हो, मेरी अपेक्षा अभी तुम्हें अदालत का अनुभव भी कम है और मैं भी लंदन जाकर बैरिस्टर की पढ़ाई करना चाहता हूं। तुम्हारे लिए अभी और भी अवसर आएंगे,इस बार तुम मुझे लंदन जाने दो।वह अपने बड़े भाई के अनुरोध के समुख हठ नहीं कर सके। उन्होंने प्रसन्नता पूर्वक वह

अवसर अपने भाई को दे दिया। यह वल्लभ भाई के त्याग का एक अनूठा उदाहरण था। यदि उनके स्थान पर कोई और होता तो शायद ही इतना बड़ा त्याग कर पाता। इतना ही नहीं, जब विट्ठल भाई लंदन से बैरिस्टर की पढ़ाई करके वापस आए तो उन्हें राजनीति से लगा हुआ। 1915 में गुजरात सभा द्वारा मुंबई प्रेसिडेंसी की राजनीतिक सभा बुलाई गई। इस सभा में दोनों भाई उपस्थित थे।इस सभा में सरकार की ओर से स्थानीय स्वशासन की नीतियों पर खुलकर चर्चा हुई। वल्लभ भाई ने भी इस अवसर पर अपने विचार रखें। पटेल ने एक बार फिर अपने भाई की भावना व इच्छा का सम्मान करते हुए राजनीति में प्रविष्ट ना होते हुए वकालत ही करते रहने का फैसला लिया। वह मानते थे कि देश की सेवा से बढ़कर पुण्य कार्य कोई नहीं है,किंतु उन्हें यह भी संतोष था कि वह अपने बड़े भाई को यह अवसर देकर उस पुण्य के भागीदार अवश्य बन रहे हैं।

कर्तव्य परायण व्यक्तित्व

वल्लभ भाई का विवाह झबरेबा से हुआ जो एक कुशल ग्रहणी थी। उन्होंने एक पुत्री और एक पुत्र को जन्म दिया। पुत्र के जन्म के लगभग 3 वर्ष बाद उनकी पत्नी का स्वास्थ्य अचानक गिरने लगा। उन्हें रह रहकर पेट में पीड़ा अनुभव होती थी। डॉक्टर की जांच से पता चला कि उनके पेट में ट्यूमर है। उन्हें इलाज के लिए मुंबई ले जाया गया। मुंबई में डॉक्टरों ने कहा कि उन्हें 15 दिन तक दवाइयां दी जाएगी और उसके बाद ऑपरेशन किया जाएगा। वल्लभ भाई अपनी पत्नी की सेवा के लिए रुकते, किंतु उन्हें एक आवश्यक मुकदमे की पैरवी के लिए अहमदाबाद लौटना पड़ रहा था। वे जाना नहीं चाहते थे किंतु उनकी पत्नी ने उन्हें समझाया कि आप अपने मुवक्किल को निराश मत करिए, आप ही उसकी एक मात्र आशा है। अपनी पत्नी के समझाने पर वल्लभ भाई ने अपना दिल मजबूत किया और अहमदाबाद लौट गए। वल्लभ भाई जिस समय बोरसद की अदालत में हत्या की एक अति संवेदनशील मामले की पैरवी कर रहे थे, इस समय उन्हें यह दुखद सूचना मिली कि उनकी पत्नी का निधन हो गया है। उनका मन हुआ कि वे पैरवी छोड़कर मुंबई के लिए निकल [2]पड़े, किंतु इससे मुकदमे के फैसले पर असर पढ़ने का डर था और उनके मुवक्किल के जीवन मरण का भी प्रश्न था। उन्हें अपनी पत्नी के कहे शब्द याद आए, कि आप ही उसकी एक मात्र आशा है। उन्होंने पैरवी पर अपना ध्यान केंद्रित किया और अपने निरपराध मुवक्किल को फांसी के फंदे से बचा लिया। मुकदमे की पैरवी के बाद वल्लभभाई के मित्र ने उनके धैर्य की प्रशंसा करते हुए कहा,वल्लभ, तुम महान हो ,यदि तुम्हारी जगह मैं होता तो इतने दुखद पल में इतनी दृढ़ता से अपने कर्तव्य का पालन नहीं कर पाता। उन्होंने अपनी मित्र को अपने मन की स्थिति बताते हुए कहा की मृत्यु के आघात से जीवन का कर्तव्य कैसे छोड़ू? यदि आज दृढ़ता जाहिर

नहीं करता तो व्यक्ति को फांसी की सजा हो सकती थी। वल्लभ भाई में यह दृढ़ता जीवन पर्यंत रही। उन्होंने अपने हित को परहित,जनहित और देश हित से बढ़कर कभी नहीं माना

निर्भीक प्रणेता व स्पष्ट वादी व्यक्तित्व

वल्लभभाई पटेल निर्भीक व स्पष्टवादिता से अपने कार्य को करते थे। सन 1924 में म्युनिसिपल बोर्ड के चुनाव हुए। 60 सदस्य बोर्ड में 12 सदस्य सरकार द्वारा मनोनीत थे। शेष 48 पदों पर स्वतंत्र चुनाव होने थे। स्थानीय कांग्रेस ने दल के आधार पर वल्लभभाई के नेतृत्व में चुनाव लड़ा और 48 में से 35 सीट जीत कर सफलता प्राप्त की। बहुमत के आधार पर वल्लभ भाई को म्युनिसिपल बोर्ड का अध्यक्ष चुना गया।उन्होंने अपने कार्यकाल में म्युनिसिपल के कार्यों में पर्याप्त सुधार किया और नगरीय स्तर पर पानी व स्वच्छता की समस्या को बखूबी हल किया। स्थानीय स्वशासन के क्षेत्र में कार्य करते समय अपने अनुभव के बारे में वल्लभभाई ने कहा था," मैने अहमदाबाद म्युनिसिपलिटी की अपनी क्षमता अनुसार सेवा की। नगर की सेवा करने में हम लोगों को जो संतोष होता था, वह मैं दूसरे क्षेत्र में प्राप्त नहीं कर सकता। इसके अतिरिक्त नगर की गंदगी को दूर करना राजनीति में गंदगी को दूर करने से अलग है। प्रथम से रात को अच्छा आराम प्राप्त होता है जबकि दूसरा आपको चिंतित रखेगा और आप अपनी नींद खो देंगे।

लौह पुरुष की उपाधि के विभूषित

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सरदार पटेल का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। सरदार वल्लभभाई पटेल के व्यक्तित्व के बारे में मौलाना शौकत अली कहा करते थे कि," पटेल जी सिर्फ बाहर से बर्फ के समान शांत थे, किंतु उग्र स्वभाव और योद्धा प्रकृति उनके वास्तविक रूप का परिचायक थी।जो उन्हें अपने पिता से विरासत के रूप में मिली थी।" आजादी से पहले के भारत के मानचित्र को देख तो उसमें दो रंग दिखाई देते थे एक पीला और दूसरा गुलाबी। गुलाबी रंग उन क्षेत्रों को दर्शाता था जो ब्रिटिश सरकार के अधिकार में थे, पीला रंग भारत की 556 छोटी बड़ी रियासतों का प्रतीक था। इन देशी रियासतों को ब्रिटिश सरकार ने इस बात की छूट दी थी कि यदि कोई पाकिस्तान के साथ लगता है तो पाकिस्तान में शामिल हो सकता है और जो राज्य चाहे वो भारत में मिल सकता है। उनके लिए एक प्रलोभन भी था कि वे चाहे तो अपनी स्वतंत्रता कायम रख सकते हैं। सरदार पटेल ने गृहमंत्री बनकर 1947 में इस संबंध में कार्य किया व सभी देसी राज्यों का दौरा किया व उन्हें भारत में शामिल होने को मजबूर किया। उनकी कोशिशें के बाद सारे भारतीय मानचित्र पर एक ही रंग उभर कर आया और पीले धब्बे समाप्त हो गए। निजाम हैदराबाद एक ऐसा राज्य बच गया जिसने गड़बड़ करने की कोशिश की, परंतु एक छोटे एक्शन से सरदार पटेल उसे भी सही मार्ग पर ले आए। इस प्रकार अखंड भारत का निर्माण हुआ। यह कार्य अत्यंत कठिन था, परंतु सरदार पटेल ने अपनी योग्यता और कुशलता से इसे पूरा किया। इसी कारण उन्हें भारत का लोह पुरुष कहा जाता है। लोह पुरुष शारीरिक रूप से बलवान ना थे और

सामान्य भारतीय वेशभूषा के अतिरिक्त उन्होंने कुछ भी धारण नहीं किया। उनका उद्देश्य केवल भारत को अखंड और सुदृढ़ बनाना था।

उपसंहार

वल्लभभाई पटेल का आरंभिक जीवन संघर्ष, सहनशीलता, स्पष्टवादिता व स्वयंनिर्माण से परिपूर्ण था। वल्लभभाई सत्य के पक्षधर थे। सत्य का पक्ष लेते समय ना तो उन्हें कभी अपने शिक्षकों से डर लगा और ना भ्रष्ट अधिकारियों व भेदभाव पूर्ण न्यायाधीशों से डर लगा। सरदार पटेल अपनी दृढ़ता और न्यायप्रियता के लिए सदैव चर्चा में रहे। जब सिद्धांत की बात आ जाती थी तब वे न परिणाम की चिंता करते थे और ना ही संबंधों में आने वाली कड़वाहट की। यह आंतरिक दृढ़ता ही थी जिसने आगे चलकर उन्हें लौह पुरुष बनाकर देश के नव निर्माण में अहम भूमिका निभाने का अदम्य साहस दिया। वल्लभभाई पटेल साहसी और दूरदर्शी व्यक्ति थे जो चुनौतियों को स्वीकार करके और कार्य को मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए दृढ़ थे, कर्म उनके जीवन का साधन था व देश सेवा उनकी साधना थी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.सेठ गोविंद दास,(1981) “सरदार पटेल,” राजपाल एंड संस दिल्ली।

2.राजमोहन गांधी की, “पटेल:अ लाइफ”(1991), नवजीवन पब्लिकेशन हाउस,

3.कुमार प्रयंक,(2007), “सरदार वल्लभभाई पटेल”, कला साहित्य संस्थान दिल्ली।

4.बालाजी कृष्णा,(2013), “सरदार वल्लभभाई पटेल भारत के लौह पुरुष”, रूपा प्रकाशन, नई दिल्ली।

5.शरद सिंह, (2017),”सरदार वल्लभभाई पटेल राष्ट्रवादी व्यक्तित्व”, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली।